गजराज और मूषकराज

प्राचीन काल में एक नदी के किनारे बसा नगर व्यापार का केन्द्र था। फिर आए उस नगर के बुरे दिन, जब एक वर्ष भारी वर्षा हुई। नदी ने अपना रास्ता बदल दिया।

लोगो के लिए पीने का पानी न रहा और देखते ही देखते नगर वीरान हो गया अब वह जगह केवल चूहों के लायक रह गई। चारों ओर चूहे ही चूहे नजर आने लगे। चूहो का पूरा साम्राज्य ही स्थापित हो गया। चूहों के उस साम्राज्य का राजा बना मूषकराज चूहा। चूहों का भाग्य देखो, उनके बसने के बाद नगर के बाहर जमीन से एक पानी का स्त्रोत फूट पड़ा और वह एक बड़ा जलाशय बन गया। नगर से कुछ ही दूर एक घना जंगल था। जंगल में अनगिनत हाथी रहते थे। उनका राजा गजराज नामक एक विशाल हाथी था। उस जंगल क्षेत्र में भयानक सूखा पड़ा। जीव-जन्तु पानी की तलाश में इधर-उधर मारे-मारे फिरने लगे। भारी भरकम शरीर वाले हाथियों की तो दुर्दशा हो गई।

हाथियों के बच्चे प्यास से व्याकुल होकर चिल्लाने व दम तोड़ने लगे। गजराज खुद सूखे की समस्या से चिंतित था और हाथियों का कष्ट जानता था। एक दिन गजराज की मित्र चील ने आकर खबर दी कि खंडहर बने नगर के दूसरी ओर एक जलाशय हैं। गजराज ने सबको तुरंत उस जलाशय की ओर चलने का आदेश दिया। सैकड़ों हाथी प्यास बुझाने ड़ोलते हुए चल पड़े। जलाशय तक पहुंचने के लिए उन्हें खंडहर बने नगर के बीच से गुजरना पड़ा। हाथियों के हजारों पैर चूहों को रौंदते हुए निकल गए। हजारों चूहे मारे गए। खंडहर नगर की सड़कें चूहों के खून-मांस के कीचड़ से लथपथ हो गई। मुसीबत यहीं खत्म नहीं हुई। हाथियों का दल फिर उसी रास्ते से लौटा। हाथी रोज उसी मार्ग से पानी पीने जाने लगे।

काफी सोचने-विचारने के बाद मूषकराज के मंत्रियों ने कहा “महाराज, आपको ही जाकर गजराज से बात करनी चाहिए। वह दयालु हाथी हैं।”

मूषकराज हाथियों के वन में गया। एक बड़े पेड़ के नीचे गजराज खड़ा था। मूषकराज उसके सामने के बड़े पत्थर के ऊपर चढा और गजराज को नमस्कार करके बोला "गजराज को मूषकराज का नमस्कार। हे महान हाथी, मैं एक निवेदन करना चाहता हूं।"
आवाज गजराज के कानों तक नहीं पहुंच रही थी। दयालु गजराज उसकी बात सुनने के लिए नीचे बैठ गया और अपना एक कान पत्थर पर चढे मूषकराज के निकट ले जाकर बोला "नन्हें मियां, आप कुछ कह रहे थे। कृपया फिर से कहिए।"
मूषकराज बोला "हे गजराज, मुझे चूहा कहते हैं। हम बड़ी संख्या में खंडहर बनी नगरी में रहते हैं। मैं उनका मूषकराज हूं। आपके हाथी रोज जलाशय तक जाने के लिए नगरी के बीच से गुजरते हैं। हर बार उनके पैरों तले कुचले जाकर हजारों चूहे मरते हैं। यह मूषक संहार बंद न हुआ तो हम नष्ट हो जाएंगे।"
गजराज ने दुख भरे स्वर में कहा "मूषकराज, आपकी बात सुन मुझे बहुत शोक हुआ। हमें ज्ञान ही नहीं था कि हम इतना अनर्थ कर रहे हैं। हम नया रास्ता ढूढ लेंगे।"
मूषकराज कृतज्ञता भरे स्वर में बोला "गजराज, आपने मुझ जैसे छोटे जीव की बात ध्यान से सुनी। आपका धन्यवाद। गजराज, कभी हमारी जरुरत पड़े तो याद जरुर कीजिएगा।"

गजराज ने सोचा कि यह नन्हा जीव हमारे किसी काम क्या आएगा। सो उसने केवल मुस्कुराकर मूषकराज को विदा किया। कुछ दिन बाद पड़ौसी देश के राजा ने सेना को मजबूत बनाने के लिए उसमें हाथी शामिल करने का निर्णय लिया। राजा के लोग हाथी पकड़ने आए। जंगल में आकर वे चुपचाप कई प्रकार के जाल बिछाकर चले जाते हैं। सैकड़ों हाथी पकड़ लिए गए। एक रात हाथियों के पकड़े जाने से चिंतित गजराज जंगल में घूम रहे थे कि उनका पैर सूखी पत्तियों के नीचे छल से दबाकर रखे रस्सी के फंदे में फंस जाता हैं। जैसे ही गजराज ने पैर आगे बढाया रस्सा कस गया। रस्से का दूसरा सिरा एक पेड़ के मोटे तने से मजबूती से बंधा था। गजराज चिंघाड़ने लगा। उसने अपने सेवकों को पुकारा, लेकिन कोई नहीं

आया।कौन फंदे में फंसे हाथी के निकट आएगा? एक युवा जंगली भैंसा गजराज का बहुत आदर करता था। जब वह भैंसा छोटा था तो एक बार वह एक गड्ढे में जा गिरा था। उसकी चिल्लाहट सुनकर गजराज ने उसकी जाअन बचाई थी। चिंघाड़ सुनकर वह दौड़ा और फंदे में फंसे गजराज के पास पहुंचा। गजराज की हालत देख उसे बहुत धक्का लगा।

वह चीखा "यह कैसा अन्याय हैं? गजराज, बताइए क्या करुं? मैं आपको छुड़ाने के लिए अपनी जान भी दे सकता हूं।"
गजराज बोले "बेटा, तुम बस दौड़कर खंडहर नगरी जाओ और चूहों के राजा मूषकराजा को सारा हाल बताना। उससे कहना कि मेरी सारी आस टूट चुकी हैं।

भैंसा अपनी पूरी शक्ति से दौड़ा-दौड़ा मूषकराज के पास गया और सारी बात बताई। मूषकराज तुरंत अपने बीस-तीस सैनिकों के साथ भैंसे की पीठ पर बैठा और वो शीघ्र ही गजराज के पास पहुंचे। चूहे भैंसे की पीठ पर से कूदकर फंदे की रस्सी कुतरने लगे। कुछ ही देर में फंदे की रस्सी कट गई व गजराज आजाद हो गए।

<u>सीखः</u> आपसी सदभाव व प्रेम सदा एक दूसरे के कष्टों को हर लेते हैं।

गजराज और मूषकराज

प्राचीन काल में एक नदी के किनारे बसा नगर व्यापार का केन्द्र था। फिर आए उस नगर के बुरे दिन, जब एक वर्ष भारी वर्षा हुई। नदी ने अपना रास्ता बदल दिया।

लोगों के लिए पीने का पानी न रहा और देखते ही देखते नगर वीरान हो गया अब वह जगह केवल चूहों के लायक रह गई। चारों ओर चूहे ही चूहे नजर आने लगे। चूहों का पूरा साम्राज्य ही स्थापित हो गया। चूहों के उस साम्राज्य का राजा बना मूषकराज चूहा। चूहों का भाग्य देखो, उनके बसने के बाद नगर के बाहर जमीन में एक पानी का स्रोत फूट पड़ा और वह एक बड़ा जलाशय बन गया। नगर से कुछ ही दूर एक घना जंगल था। जंगल में अनगिनत हाथी रहते थे। उनका राजा गजराज नामक एक विशाल हाथी था। उस जंगल क्षेत्र में भयानक सूखा पड़ा। जीव-जन्तु पानी की तलाश में इधर-उधर मारे-मारे फिरने लगे। भारी भरकम शरीर वाले हाथियों की तो दुर्दशा हो गई।

हाथियों के बच्चे प्यास से व्याकुल होकर चिल्लाने व दम तोड़ने लगे। गजराज खुद सूखे की समस्या से चिंतित था और हाथियों का कष्ट जानता था। एक दिन गजराज की मित्र चील ने आकर खबर दी कि खंडहर बने नगर के दूसरी ओर एक जलाशय है। गजराज ने सबको तुरंत उस जलाशय की ओर चलने का आदेश दिया। सैकड़ों हाथी प्यास बुझाने डोलते हुए चल पड़े। जलाशय तक पहुंचने के लिए उन्हें खंडहर बने नगर के बीच से गुजरना पड़ा। हाथियों के हजारों पैर चूहों के ऊपर से होते हुए निकल गए। हजारों चूहे मारे गए। खंडहर नगर की सड़कें चूहों के खून-मांस के कीचड़ से लथपथ हो गईं। मुसीबत यहीं खत्म नहीं हुई। हाथियों का दल फिर उसी रास्ते से लौटा। हाथी रोज उसी मार्ग से पानी पीने जाने लगे।

काफी सोचने-विचारने के बाद मूषकराज के मंत्रियों ने कहा "महाराज, आपको ही जाकर गजराज से बात करनी चाहिए। वह दयालु हाथी है।"
मूषकराज हाथियों के वन में गया। एक बड़े पेड़ के नीचे गजराज खड़ा था।
मूषकराज उसके सामने के बड़े पत्थर के ऊपर चढ़ा और गजराज को नमस्कार करके बोला "गजराज को मूषकराज का नमस्कार। हे महान हाथी, मैं एक निवेदन करना चाहता हूं।"

आवाज गजराज के कानों तक नहीं पहुंच रही थी। दयालु गजराज उसकी बात सुनने के लिए नीचे बैठ गया और अपना एक कान पत्थर पर चढ़े मूषकराज के निकट ले जाकर बोला "नन्हे मियां, आप कुछ कह रहे थे। कृपया फिर से कहिए।"
मूषकराज बोला "हे गजराज, मुझे चूहा कहते हैं। हम बड़ी संख्या में खंडहर बनी नगरी में रहते हैं। मैं उनका मूषकराज हूं। आपके हाथी रोज जलाशय तक जाने के लिए नगरी के बीच से गुजरते हैं। हर बार उनके पैरों तले कुचले जाकर हजारों चूहे मरते हैं। यह मूषक संहार बंद न हुआ तो हम नष्ट हो जाएंगे।"
गजराज ने दुख भरे स्वर में कहा "मूषकराज, आपकी बात सुन मुझे बड़ा शोक हुआ। हमें ज्ञान ही नहीं था कि हम ऐसा अनर्थ कर रहे हैं। हम नया रास्ता ढूंढ लेंगे।"

भुधकराएल कुउह्लउ हरे भुर मं गेला “गएलराएल, मुपने भुए एमे ळेट एीव की गउ प्रान मे भुनी। मुपका पनुवाम। गएलराएल, कही हमारी एहगउ पके उे याम एहग कीएिगा।”

गएलराएल ने मेगा कि यह नन्ह एीव हमारे किमी काम क्रा मुएगा। में उमने केवल भुभ्रुाकर भुधकराएल के विमुा किया। कुळ मिन गाम पहेंमी मिम के राए ने मेना के भएवृउ गनाने के लिए उमने हाथी माभिल करने का निळय लिया। राए के लेग हाथी पकहने मुए। एंगल में मुकर वे मुपमाप कई प्रकार के एल गिळाकर मले एउे हे। मेकहें हाथी पकह लिए गाए।

एक राउ हाथियें के पकह एने मे मिउिउ गएलराएल एंगल में भ्रुम रुहे थे कि उनका पैर भुापी पहियें के नीमे ळल मे मगाकर रापि रभ्मी के ढंमे में ढंम एउा हे। एमे ही गएलराएल ने पैर मुगे गम्हया रभ्मा कम गया। रभ्मीका मभरा मिरा एक पेह के भेट उने मे भएवृउी मे गंधा था। गएलराएल िमषाहने लगा। उमने मुपने मेवकें के पुकारा, लेकिन केई नहीं मुया। कैन ढंमे में ढंमे हाथी के निकट मुाएगा? एक युवा एंगली हैमा गएलराएल का गकह मुमर करउा था। एग वह हैमा ळेट था उे एक गार वह एक गहे में ए गिरा था। उमकी मिल्लाहट मुनकर गएलराएल ने उमकी एमन गमाई थी। िमषाहें मुनकर वह मैहा भेर ढंमे में ढंमे गएलराएल के पाम पहंमा। गएलराएल की हालउ मेप उमे गकह पक्का लगा।

वह मीपा “यह कैमा मनूाय हैं? गएलराएल, गउाउए क्रा करं? मैं मुपके छहाने के लिए मुपनी एन ही मे मकउा हं।”
गएलराएल गेले “गेट, उुम गम मैहकर पिहहर नगरी एाउ भेर प्रुहें के राए भुधकराएल के माराा हाल गउाना। उमसे कहना कि मेरी मारी मुम एट प्रुकी हैं।

हैंमा मुपनी पूरी मक्ति मे मैहा-मैहा भुधकराएल के पाम गया भेर मारी गाउ गउाई। भुधकराएल उुरंउ मुपने गीम-उीम मैनिकें के माथ हैंमे की पीठ पर गैठ भेर वे मीधे ही गएलराएल के पाम पहंमे। प्रहे हैंमे की पीठ पर मे कुमकर ढंमे की रभ्मी कुउरने लगे। कुळ ही मेर में ढंमे की रभ्मी कट गई व गएलराएल मुएाम हे गाए।

मीपः मुपमी महहाव व प्रेम मदा एक मभरे के कहें के हर लेउे हैं।

मुनुवाम - पृष्ठ ढ्ाउ